

ये नज़्म उस आदमी की तरफ से है जो उसे  
चाहता है, पर कहके से डरता है। उसे देख कर  
आगे बढ़ता है पर उसी पर करता है।

तो तुम्हें कैसे बताऊँ तुम क्या हो ?  
इंसान ही था कोई घरी ही ।  
तुम्हारी मुस्कुराहट दिल में छर कर जाती है,  
तुम न हो ताँ तुम्हारी आँखें सताती हैं।  
काश तुम्हें मुझसे दूर न होने देता,  
मेरा बस चले ताँ तुम्हें कभी खोने न देता ।  
कैसी है ये उलझन तुम्हें कुछ बता नहीं सकता,  
लेकिन तुम्हें, तुम्हारे चेहरे की दिल से छुपा नहीं सकता

तुम मेरे Instagram के Recent Search में दिखती हो,  
तुम मेरे दिल के साथ मेरी gallery में भी रहती हो।  
जब तुम डरती हो ताँ मैं भी सहम जाता हूँ,  
जब तुम मुस्कुराती हो ताँ मैं भी खिल जाता हूँ !  
तुम बस देख कर मधुर बोल दिया करी,  
मैं ताँ तुम्हें अपना मान कर खुश हो जाता हूँ ।



जब पहली बार तुम्हें देखा तब मैं ही गया,  
जब तुमसे बात हुई तब खुद को पा लिया  
सिर्फ तुम्हें देखने लका में आया करता हूँ,  
तुम्हें ना पाकर बेचैन हो जाता करता हूँ।

तुम्हारा दीवार-ए-दुस्न बनकर मैं खुश होता हूँ,  
तुमसे बात करने के बहाने मैं दुहा करता हूँ।  
जब तुम हसती हो तो समय भी थम जाता है,  
बस तुम्हारी एक झलक के लिए कोशिशें हजार करता हूँ।

तुम्हारे चेहरे से मेरी सुबह और रात होती है,  
मेरी शाम भी तुम्हारी मुस्कुराहट होती है।  
तुम्हारी आवाज भी मुझे संगीत बन लगी है,  
दिल भी खुश होता है जब तुमसे मुलाकात होती है।

और आखिर में उस हसती ~~मुस्कुराती~~ मुस्कुराती,  
चहचहाती, खिलखाती पसी से कहगा चाहूंगा कि

मेरा इश्क ही, इबादत ही तुम,  
इस बान्चीज की चाहत ही तुम,  
मैं मुसाफिर और मंजिल ही तुम,  
मैं अनेजान समुद्र और साहिल ही तुम।  
तुमसे मेरी रात है और तुमसे मेरा दिन,  
जिंदगी अब फिजूल सी लगती है तुम्हारे बिना।